OM-10 -2018 FINAL_Page 1 and 2 7/27/2018 1:44 PM Page 3

गोविंदा आला रे...!!!

कुछ ही दिनों में ये मौसम आने वाला है जब 'गोविंदा आला रे...' का गीत हर जगह गूंजेगा। लोग नृत्य और गीतों के माध्यम से हर जगह त्योहार मनायेंगे कृष्ण जन्माष्टमी का। मनाना भी चाहिए, क्योंकि वो है ही इतना मनमोहक। उसके लिए जितना अधिक से अधिक किया जाये, उतना कम लगता है। लोग क्या-क्या नहीं करते इस त्योहार पर उस मोहन के लिए। तो ज़रूर उस मोहन ने भी कुछ किया होगा किसी जीवन में, तभी तो वो सभी का है, ना कि किसी एक का है। जिसने मोह को जीता है, वो सभी का प्यारा है। इसलिए देवताओं में सर्वश्रेष्ठ यदि किसी का त्योहार है, तो वो है श्रकृष्ण जन्माष्टमी।

हर बार लोग कुछ न कुछ जन्माष्टमी पर नया करने की कोशिश करते हैं। कहीं पर भागवत पाठ होता है, कहीं पर गीता पाठ होता है, हम ये सारा कुछ तो करते ही आये। भावनावश जो हमने किया वो तो ठीक है, पर विचार करने पर ये भी बात अंदर आती है कि कृष्ण का आह्वान तो करते हैं, उसको प्यार भी करते हैं, लेकिन कभी ये भी सोचा कि हम कृष्ण के साथ भी खेलपाल कर सकते हैं! या कृष्ण की मूर्ति के साथ ही खेलकर खुश होंगे! सोचने पर ये भी आता है कि मैं भी कृष्ण के साथ खेलूँ, तो उसके लिए मुझे क्या करना होगा? कौन खेल सकता है उनके साथ? बस ये आप सोचेंगे तो आप पायेंगे कि अरे! कृष्ण के साथ कोई साधारण आत्मा खेल सकती है क्या? तो हमें भी उनके साथ खेलने के लिए उन जैसा आकर्षणमूर्त बनना पड़ेगा।

मनमोहक के मन की मूर्ति

मूरत शब्द मन से है, तो देखो, कृष्ण की जो मन की मूरत है वो हमारे मन की मूरत से मैच करती है? जब मूरत समान होगी, तभी हम भी एक समान हो पायेंगे और एक साथ खेल सकेंगे, क्योंकि मित्र ही मित्र के साथ खेलता है। तो हमें मन की मूरत की ओर थोड़ी मेहनत करनी होगी, उसे वैसा ही बनाना होगा, जैसी मोहन के मन की मूरत। तभी तो हम उसके साथ खेल पायेंगे। क्या कभी आपने सोचा कि मन मोहन को ऐसा किसने बनाया? कोई तो उसे ऐसा बनाने वाला भी होगा।

मनमोहक की मुरली

मन मोहन वो जो मन को प्रिय है। मोहन की मुरली बाजी रे। हमेशा कृष्ण को मुरली बजाते हुए दिखाते हैं। मन को सुंदर बनाने के लिए श्रेष्ठ ज्ञान का मनन ही उसकी सुंदरता है। जहां मन में शुभ और शुद्ध भाव भरे विचार होंगे। उसके मन में सभी के लिए खुशी और सुकून वाले संकल्प ही रमण करते होंगे। तभी तो मन की मुरादें हासिल होंगी। तो मन में शुद्ध संकल्पों का साम्राज्य ही मनमोहक बनाता है। हमें भी उन जैसा बनना है तो मन को शुद्ध बनाना ही होगा। तभी तो हम उनके साथ आ पायेंगे और उनके साथ खेल पायेंगे। मन में सदा श्रेष्ठ ज्ञान का मनन और उसका श्रेष्ठ चिंतन ही कृष्ण के साथ आने का एक आधार है। आप भी चाहते हो ना कि हम कृष्ण के साथ खेलें। उनके साथ रास रचायें। तो अपने मन रूपी मंदिर में सदा ही ज्ञान की मुरली बजानी होगी। जैसे कृष्ण सबका प्रिय है, आकर्षण मूर्त है तो हमें भी मन को श्रेष्ठ बनाना ही होगा।

मन के अंतर को समझें

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो चारो ओर झूठ का बोलबाला, झूठ का साम्राज्य है, जिसे हम कंसपुरी कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। क्योंकि कंस एक प्रतिरूप है आज के भाई बहन के रिश्ते का। तो कृष्ण और कंस दोनों का अंतर करने वाला मन ही है। तो आज हमें देखना चाहिए कि हमारे मन में किस कैटेगरी के संकल्प चल रहे हैं। कृष्ण जैसे या कंस जैसे। तो मन के मैल को दूर करने पर ही हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे। तो कृष्ण जैसा बनना है ना! न कि कंस जैसा। क्योंकि हम देख रहे हैं कि आज कोई भी भाई अपनी बहन का उस रूप से सम्मान नहीं करता, और उस रिश्ते में उतनी पवित्रता और उतना प्रेम भी नहीं रहा, जो कभी हुआ करता था। तो आज उसी का एक मिसाल है कंस और देवकी की कहानी। अच्छा, आप बताओ कि कोई आकाशवाणी होती है और उसमें आवाज़ आती है कि इसका आठवां पुत्र आपको मारेगा। क्या यह संभव है? अगर संभव है, तो आज भी हर ज्योतिषी बताता है कि इतने समय बाद आपका ये हो जायेगा, वो हो जायेगा, तो क्या वो होता है?

आकाशवाणी

सभी जगह असमंजस की स्थिति है, सभी कन्फ्यूज़्ड हैं कि सही क्या है। हम आपको बता रहे हैं कि आज के परिप्रेक्ष्य में ये बात सटीक बैठती है कि आकाशवाणी हुई, माना परमात्मा का मैसेज आया कि जब मैं इस धरती पर आऊंगा तो सबकी बेड़ियां खुल जायेंगी माना सब बंधन मुक्त हो जायेंगे। तो क्या आप भी बंधनमुक्त होना चाहते हैं? तो जान लें कि परमात्मा की आकाशवाणी आबू से हो रही है कि आप भी अगर कृष्ण के समान सुंदर और बंधनमुक्त बनना चाहते हैं तो स्वयं को जान अपनी भीतरी सुंदरता को पहचानें, यही कृष्ण जन्माष्टमी के साथ सच्चा न्याय होगा और हम भी उनके समान सुंदर बन पायेंगे।

गुजरात के तत्कालिन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी दादी प्रकाशमणि से आशीर्वाद लेने के बाद ज्ञानचर्चा करते हुए।

विश्व परिवर्तक पारसमणि...

-पेज 1 का शेष

उन क्षणों को सभी ने मूल्यवान समझकर संजो रखा है।

दादी जी ने महानता के आसमान को छू लेने के बावजूद अपने अंदर की इंसानियत को सदा कायम रखा। एक सामान्य व्यक्ति या मानव के रूप में दादी जी को जब हम दखते हैं, तो इंसानियत और मानवता का अर्थ समझ में आने लगता है। दादी जी छोटे-बड़े, साधारण से भी साधारण व्यक्ति का खास ध्यान रखते। खास करके वृद्ध आयु के भाई बहनों को पास बुलाकर विशेष एक-एक को उनके आरामदायक आवास-निवास के लिए पूछते, उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछकर उन्हें उचित सुविधा देते थे।

दादी जी ने कभी भी किसी के द्वारा कही सुनी बातों पर विश्वास कर किसी भी आत्मा के प्रति अपना मत नहीं बनाया, और उस व्यक्ति को उस नज़र से नहीं देखा। इतने बड़े विशाल यज्ञ में हर तरह के, हर विशेषताओं के, हर कैटेगरी के लोग रहते थे, उन सभी के लिए दादी खास थीं। और तो और, जब नौकर वगैरह कार्य करते थे, वे भी दादी से बहुत प्यार करते थे, और दादी जी भी उन्हें प्यार लुटाती थीं। दादी जी हरेक के साथ जैसे एक मददगार के रूप में खड़ी हों, ऐसी सबको भासना आती थी। दादी जी के इस इंसानी जज़्बे रूपी विशाल वृक्ष की छाया से कोई भी वंचित नहीं रहा।

दादी जी एक कुशल प्रशासिका तो थीं ही, पर उन्होंने एक आदर्श टीचर, सभी की प्रेरणास्रोत, एक ममतामयी माँ, पालनहार पिता के रूप में अपनी दूरदृष्टि से यज्ञ को आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँचाया। परन्तु एक आदर्श विद्यार्थी का उनका रूप भी हम अनदेखा नहीं कर सकते। उन्होंने एक सफल प्रशासिका के साथ-साथ आदर्श विद्यार्थी की भूमिका भी बखूबी निभाई। दादी जी सभी से कुछ न कुछ गुण उठाती रहतीं अर्थात् सीखना उनके ज़हन में था। आठ दशक के जीवन में दादी जी एक प्रखर व्यक्तित्व के रूप में जीवंत रहीं। इस बार हम दादी जी का बारहवां पुण्य स्मृति दिवस मना रहे हैं। तो यह घड़ी हमारे लिए सिर्फ दादी को याद करने तक ही सीमित नहीं, अपितु अपना आत्मविश्लेषण करने की भी है। स्वयं को शांति की गहराई में ले जाकर, अपनी विशेषताओं को दादी जी की विशेषताओं के साथ जोड़कर देखना होगा कि कहाँ कमी है, जिसे हमें बदलना है। अगर हम ऐसा बन जाते हैं तो यही दादी जी को सच्ची खुशी दिलाने वाली हमारी श्रेष्ठ श्रद्धांजलि होगी। दादी जी पवित्र और निर्मल प्रेम की मूर्ति थीं। दादी जी के व्यक्तित्व में जो चुम्बकीय आकर्षण था, उसकी शुरुआत ही उनकी पवित्र और स्वच्छ मुस्कराहट से होती थी। दादी जी की उपस्थिति मात्र ही आस-पास की हवाओं में अपनी रुहानी खुशबू फैला देती थी।

दादी जी ने सबके गुणों को परखा और उसी अनुरूप उन्हें सेवाएं भी दीं और यज्ञ को विशेषताओं से भरा एक खूबसूरत गुलदस्ता बनाकर आगे बढ़ाया। आज भी उनके द्वारा सींचे गए इस विशाल वृक्ष का मीठा फल सर्व आत्माओं को मिल रहा है। ऐसी हमारी प्यारी दादी प्रकाशमणि, प्रकाश स्तम्भ बनकर आज भी हम सबके साथ और सम्मुख हैं। आज हम उनसे मिली शिक्षाओं को धारण कर उनके जैसा बनने की प्रतिज्ञा लेते हैं, यही हमारा उनके प्रति सच्चा स्नेह और श्रद्धासुमन है।

वडोदरा-अटलादरा। सम्मान समारोह कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. अरुणा के साथ सांसद सभ्य रंजन बहन भट्ट, धारा सभ्य सीमा मोहिले, मेयर डॉ. जिगीषा शेठ, डेप्युटी मेयर डॉ. जीवराज चौहान, स्टैंडिंग कमेटी के चेयरमैन सतीश पटेल, ब्र.कु. राज दीदी, ब्र.कु. हरीश वैद्य तथा अन्य गणमान्य लोग।

ग्वालियर-म.प्र.। ग्लोरी स्कूल में 'हाऊ टू कीप बैलेंस बिटविन वर्किंग एण्ड पर्सनल लाइफ थ्रू राजयोग' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. चेतना, स्कूल डायरेक्टर अमिता वाधवानी, कोऑर्डिनेटर कीर्ति बहन, कोऑर्डिनेटर पूजा बहन, योगा टीचर रितु बहन तथा अन्य।